Today's Poem – 29.05-2014

शिवबाबा है वन्डरफुल बाप

वो करते नहीं कभी कोई पाप

वो टीचर सतगुरु है

उनका नहीं कोई गुरु है

देही-अभिमानी बच्चे ही याद में ठहर सकते

बाप की करेन्ट खींचते रहते

इस ड्रामा में सबका अपना अपना पार्ट है

हमें रखना अपना चार्ट है

सबसे ममत्व निकाल पूरा ट्रस्टी होकर रहना है

रावण मत पर नहीं चलना है

ब्रह्मा बाप समान बनना

अर्थात् सम्पूर्णता की मंज़िल पर पहुँचना

हर कर्म में बाप के साथ भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का अनुभव करना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!